International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

युवावस्था और नेतृत्व

डा. विजय सिंह गहलोत प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़ली जोधपुर

डा. सचेन्द्र बोहरा प्राचार्य
रोहित कॉलेज राहित, पाली

आज वर्तमान समय के युवाओं में नेतृत्व करने की एक होड़ ही नहीं बल्कि उनमे नेतृत्व करने की सामर्थ्य भी स्पष्ट दिखाई पड़ती है। भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अपने कुशल नेतृत्व का प्रदर्शन युवा नेतृत्व कर्ताओं द्वारा किया जा रहा है। युवाओं द्वारा समाज का सही मागर्दशन करने की परंपरा कोई नई बात नहीं है बल्कि पहले से ही हमारे देश का युवा अपने–अपने समाज का भिन्न–भिन्न स्तरों पर मार्गदर्शन करता आया है। उदाहरण स्वरूप यदि धार्मिक क्षेत्र में सही मार्गदर्शन करने वालों में एक नाम लिया जाता है, तो वह है स्वामी विवेकानंद, जो एक युवा ही थे। इसी प्रकार अलग–अलग क्षेत्रों में अपने कुशल नेतृत्व का प्रदर्शन करने वाले कई नाम ऐसे आते ही आते है, जो युवा ही रहे है जैसे राजनीति के क्षेत्र में सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह आदि नाम शामिलि है।

आज के तात्कालिक समय में युवाओं में प्रबंधन या नेतृत्व के प्रति अधिक झुकाव देखि जा सकती है, क्योंकि अधिकतर युवा किसी संस्था, समूह या समाज का नेतृत्व करना अधिक पंसद करता है, वह लोगों को अपने विचारों के अनुसार अपने अधिकार क्षेत्र में बांध कर रखना पंसद करता है। प्रबंध चाहे सामाजिक हो राजनीतिक हो या संस्थागत, इन सभी जगहों पर नेतृत्व का अपना एक विशिष्ट स्थान है। एक समूह या संस्था की सफलता या असफलता नेतृत्व या नेतृत्व कर्ता पर आधारित होता है। कुशल नेतृत्व के अभाव के कारण कोई भी संस्था सफलता की सीढ़ियों को पार नहीं कर सकती है। यहां तक भी माना जाता है कि कोई संस्था या समूह अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकती है जब उसका प्रबंधन या नेतृत्व कर्ता अपन नेतृत्व की भूमिका का सही निर्वहन करता है प्रत्येक समूह के लिए नेतृत्व की आवश्यकता होती है चाहे वह राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या औद्योगिक। कोई भी समूह बिना नेतृत्व के आस्तित्वहीन होता है। इसलिए प्रभावशाली नेतृत्व के लिए आवश्यक है कि सदैव योग्य, अनुभवी और व्यवहार कुशल व्यक्ति को ही अपना नेता चुनें।

सत्ता के शीर्ष तलों पर प्राधिकार या सत्ता मौजूद होती है। इसके उपयोग से संगठन में अधीनस्थों से काम लिया जाता है, लेकिन इस प्राधिकार की सत्ता के साथ व्यक्तित्व की सत्ता का होना भी आवश्यक है। यह व्यक्तित्व की सत्ता ही नेतृत्व शक्ति का निर्धारण करती है। अधीनस्थों को उद्दश्यों के साथ समन्वित करने की प्ररणदायी व्यक्तिगत विशेषता ही नेतृत्व कहलाती है। नेतृत्व उन बेहतरीन गुणों मे से एक है जो एक युवा के पास हो सकता है। नेतृत्व करना एक कठिन कार्य है। यह हमारे बहादुर नेता ही हैं जिन्होंने अपनी युवा अवस्था से ही देश में प्रगति को प्रेरित किया और राष्ट्र को सफल बनाने में लगाातार कोशिश की। कोई भी समूह या समाज बिना नेता के अपने व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं होता है। जबकि, एक अच्छा नेता होना हर किसी के लिए साधारण बात नहीं है। शासन करना, निर्णय करना आज्ञा देना आदि सब एक कला है, एक कठिन तकनीक है। परन्तु अन्य कलाओं की तरह यह भी एक नैसर्गिक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति में यह गुण या कला समान नहीं होती है। किसी भी कार्य को सम्पन्न करने या कराने मे व्यक्ति के समायोजन के लिए पर्यवेक्षण, प्रबंध तथा शासन का बहुत महत्व होता है। किसी समूह का नेतृत्व करने के लिए एक निश्चित गुण के साथ–साथ उसे अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए दृढ़निश्चयी होना अत्यंत आवस्यक होता है। दृढ़निश्चयी होने के लिए आत्मविश्वास होना होगा, जो एक अच्छा और समृद्ध नेतृत्व कर्ता बनने के लिए आवस्यक होता है। एक नेतृत्व कर्ता को लोगों को अपनी बात समझाने और यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास से स्वयं भरा होना तथा कार्य के सकारात्मक परिणाम के प्रति स्वतः आस्वास्थ होना चाहिए कि उनके कार्यो से समाज में आमूल–चूल परिवर्तन लाने की क्षमता है।

शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक सामर्थ्य एवं योग्यता की दृष्टि से युवाओं में अगणित असमानताए है। किनतु, यदि युवा यथार्थ नेतृत्व प्रदान करना चाहते हों– तो जगत में मौजूद असमानताओं तथा विभिन्नताओं को स्वीकार करते हुए, सबसे पहले हमें अपने अंदर निहित शाक्तयों और क्षमताओं आदि को समाज में प्रगति, विकास,पूर्णता, समानता और साम्यावस्था, के बीच के अन्तर को कम करने की दिशा में नियोजित करना होगा। इस साम्यावस्था को प्राप्त करने के लिए हमें बहुत गहराई से चिन्तन कर के पहले उस प्रस्थान–बिप्दु को ढूँढ़ निकालना होगा कि समाज के किस स्तर पर रहने वाले मनुष्यों को ऊपर उठाने के लिए हमें सर्वप्रथम अपनी

अन्तः शक्तियों और क्षमताओं का व्यवहार करना चाहिये? इस विषय पर चिन्तन करने से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि– जो लोग अभिज्ञता, सहानुभूति, और विवेक की दृष्टि से बिल्कुल न्युनतम स्तर या सामान्य स्तर पर रहने वाले मनुष्यों की अपेक्षा साधारणतः थोड़े उच्चतर स्तर पर हैं – वैसे लोग ही समाज के उन लोगों को ऊपर उठा सकते हैं जो बुद्धि, समझदारी, योग्यता, प्रतिभा, गुणों आदि की दृष्टि से उनकी अपेक्षा अभी न्यूनतम सोपान पर खड़े हैं। और ठीक इसी जगह पर नेतृत्व की क्षमता स्वतः ही उभर कर सामने आ जाति है।

मौजूदा समय में युवाओं में कुशल नेतृत्व कर्ता होने के लिए कुछ निम्नलिखित आवस्यक गुणों का होना अति आवश्यक है जैसे– नेता में यह कौशल हो कि वह कर्मचारी या जिस समूह का वो नेतृत्व कर रहा है से काम ले सके तथा कर्मचारी उससे समूह के लोग उसको सम्मान दे। और नेता कर्मचारियों या समूह के लोगों के साथ पक्षपात रहित व्यवहार करें। नेता को प्रशिक्षित होना चाहिए, अनुभवी होना चाहिए जिससे वह कर्मचारियों या समूह को भी प्रशिक्षित कर सके। साथ ही कर्मचारियों के साथ वादिता रखने वाला हो तथा किसी भी कर्मचारी से दूसरे कर्मचारी से कुछ गालत विचार न कहे। उसमें सरल आत्मविश्वास का होना अति महत्वपूर्ण होता है, जिससे वह विशेश परिस्थितियों में भी अपने को कमजोर न पड़ने दे। नेता में अपने क्रोध को नियंत्रित करने की क्षता होनी चाहिए। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कर्मचारी उसके आदेशों का पालन कर रहे है या नहीं। अधीनस्थ कर्मचारियों के उचित को भी मानने वाला तथा अपनी योग्यता और सुझावों द्वारा कर्मचारियों से कार्य लेने की क्षमता हो। बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से कर्मचारियों को डांटने की क्षमता तथा समय आने पर उनकी प्रशंसा करने की योग्यता हो। परिस्थितियों का सामना करने के लिए सदैव तत्पर हो।

उपर्यक्त विशेषताओं के साथ–साथ कुछ सैद्धांतिक पक्ष भी होता है जिसे युवाओं को ध्यान मे अवश्य रखना चाहिए। जैसे– किसी घटना या समस्या अथवा कार्य का उचित मूल्याकंन करना। हर वक्त संबन्धित अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करना। सभी कर्मचारियों अथवा समूह के लोगों के साथ समान व न्यायपूर्ण व्यवहार करना। जब कभी कर्मचारी या समूह का काई भी व्यक्ति मिलने की इक्षा प्रगट करे तो उसे अपना समय देना जरूरी होता है तथा कर्मचार या समूह के लोगों की समस्याओं का सरकार तथा प्रबंधकों एवं मालिकों से विस्तार में विचार–विमर्श करना चाहिए। इस प्रकार लोगों को प्रेरित करने की हिम्मत होनी चाहिए और किसी भी स्थिति में आशा नहीं खोनी चाहिए, इससे लोगों का नेतृत्व कर्ता के प्रति विश्वास बढ़ेगा और वे वास्तव में नेतृत्व कर्ता को अपना आदर्श मानेंगे। ईमानदारी एक और विशेषता है जो नेतृत्व को ईमानदार और सच्चा होने के रूप में निर्धारित करती है जो संस्था या समूह से प्यार और स्नेह प्राप्त करने में मदद करती है और वे नेतृत्व कर्ता को लक्ष्य हासिल करने में मदद करने के लिए आँख बंद करके अनुसरण करते हैं।

निष्कर्षतः उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि युव नेतृत्व कर्ता अवश्य रूप से अपने नई ऊर्जा, नए विचारों, नई सोच एवं कुशल नेतृत्व से वर्तमान समाज का सही दिशा निर्देश करने में निश्चित तौर पर पूर्ण समर्थ है। जिसके लिए युवा नेतृत्व कर्ताओं को नेतृत्व करने के अवसर प्रदान किया जाना चाहिए, उन्हें समाज के अन्य लोगों द्वारा सुनना, समझाना एवं स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि यही हमारे भविष्य के प्रति उत्तरदायी होंगे।

संदर्भ

1. चेमेर्स, एम एम 2002 संज्ञानात्मक, सामाजिक और ट्रांस्फार्मशनल नेतृत्व के भावनात्मक खुफिया प्रभावकारिता और प्रभावशीलता, आर. ई. रिग्गिओव, एसई मरफी, फ.जे.पिरोज्जोलो (एड्स.), एकाधिक इंटेलीजेंस और नेतृत्व.)
2. बूंद बूंद में सागर : युवा नेतृत्व कि गहरी पड़ताल – असरफ पटेल, मीनू वेंकटेश्वरन, कामिनी प्रकाश अर्जुन शेखर, सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली आइ.एस.बी.एन.
3. Human behavior and the social environment, macro level: groups, communities, and organizations by van wormer, Katherine s Publication date-2007
4. Heifetz, Ronald (1994). Leadership without Easy Answer
5. नेतृत्व
6. नेतृत्व की अवधारणा तथा इसके गुण–श्री नवनिहरण मुखोपाध्याय द्वितीय हिन्दी संस्करण सितम्बर